संसद परिसर में भारतीय विदेश सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों से माननीय अध्यक्ष का संवाद

इंडियन फॉरेन सर्विस के सभी ट्रेनिंग ऑफिसर्स, हमारे पड़ोसी देश भूटान के फॉरेन सर्विस के अधिकारीगण, मैं आपका संसद परिसर में स्वागत करता हूं।

भारतीय विदेश सेवा एक बहुत प्रतिष्ठित सेवा है। यह कठिन भी है, लेकिन एक व्यापक स्वरुप के साथ वैश्विक राजनीतिक क्षेत्र के अंदर इस सेवा का एक विशेष स्थान है। जब आप ट्रेनिंग के बाद अलग-अलग देशों के अंदर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे, कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिनिधित्व करेंगे, उस समय आपकी सोच, आपका चिंतन, आपका दायरा बहुत व्यापक होगा। इस प्रशिक्षण अवधि के दौरान आपने जो भी ट्रेनिंग की, उस प्रशिक्षण अवधि के अनुभव का लाभ भी आपको कहीं न कहीं मिलेगा। जीवन के अंदर एक समय ऐसा भी होता है, जब अध्ययन पर ही हमारा सारा ध्यान केंद्रित होता है। उस अध्ययन के बाद जब हम वास्तविक जिंदगी के अंदर जाते हैं तो हमें कई सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई नए सेक्टर्स आते हैं, क्योंकि यह सेवा ऐसा है कि आप उस देश के अंदर भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। आप दुनिया के अंदर भारत की तस्वीर रखने का काम करेंगे। जितना आपका अनुभव होगा, आपका प्रेजेंटेशन जितना व्यापक होगा, उतना ही भारत के बारे में एक अच्छी धारणा बनेगी।

हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश है, जनसंख्या की दृष्टि से भी बड़े देश है। हमारी विरासत और ऐतिहासिक पलों को भी हमें समझना पड़ेगा। आपने इतिहास को किताबों में पढ़ा है। विरासत की कुछ घटनाओं को भी आपने किताबों में पढ़ा होगा। दुनिया के अंदर हम डेमोक्रेटिक देश केवल इसलिए नहीं है कि हमने संसदीय लोकतंत्र को अपनाया है। आप जितने भी देश का अध्ययन करेंगे, आपको लगेगा कि जब भारत आजादी की लड़ाई लड़ रहा था और आजादी के बाद भारत की स्थिति में क्या-क्या परिवर्तन हुआ, दुनिया के बहुत ही कम देश होंगे, जिनकी जनसंख्या इतनी बड़ी अशिक्षित थी। जब हम आजाद हुए थे तो हमने संसदीय लोकतंत्र को अपनाया और सबको मताधिकार दिया। उस समय भी दुनिया के बहुत सारे जो विकसित देश थे, उनमें भी लिंग के आधार पर मतों का अधिकार नहीं दिया था।

लेकिन हमने कहा कि हर व्यक्ति को जो वयस्क है, जो मतदान की योग्यता उम्र के आधार पर रखता हो, न लिंग के आधार पर, न शिक्षा के आधार पर, हम कोई भेदभाव नहीं करेंगे। वर्ष 1952 का पहला इलेक्शन और वर्ष 2019 के इलेक्शन को देखेंगे और एक अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि मतों का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है। ज्यों-ज्यों मतदाताओं में जागरुकता पहुंची, तो मतदान का प्रतिशत बढ़ता गया। हम कभी विदेश में जाएंगे तो कहेंगे कि हम सबसे बड़ी डेमोक्रैसी हैं। हमारी डेमोक्रैसी स्ट्रांग हुई है। इसके स्ट्रांग होने के क्या कारण हैं? 1952 में यह मतदान प्रतिशत था, लगातार मतदान का प्रतिशत बढ़ना डेमोक्रैसी के प्रति लोगों का विश्वास है।

दूसरा विषय कि भारत में लगातार इतनी बड़ी जनसंख्या के अंदर निष्पक्ष चुनाव होना, चुनाव प्रक्रियाओं पर सवाल नहीं उठना और सबसे बड़ी बात है कि इतनी बड़ी संख्या के अंदर, आप कई देश जाएंगे, कहीं की पॉपुलेशन एक मिलियन होगी, कहीं की दो मिलियन होगी, कहीं की दस मिलियन होगी, जब पॉपुलेशन की आप

चर्चा करेंगे कि इतनी बड़ी हमारी पॉपुलेशन है, हम भी जब विदेश में जाते हैं तो बड़े-बड़े देश की पॉपुलेशन भी हमसे एक-चौथाई से भी कम है। वहां भी कभी न कभी चुनाव पर सवाल उठे। कभी सैनिक शासन आए, कई अन्य शासन आए। लगातार पचहत्तर वर्षों तक डेमोक्रैटिक सिस्टम से शासन चले, सत्ताओं का परिवर्तन हो, चाहे राज्यों में हो, चाहे केंद्र में हो, चाहे पंचायत में हो, हमारा डेमोक्रैटिक सिस्टम पंचायत से लेकर दिल्ली तक हर चीज में मतदान से है और मतदान के बाद जो संस्थायें हैं, उनका अपना-अपना काम रेखांकित है कि पंचायत का क्या काम होना है, विधान सभा का क्या काम होना है, पार्लियामेंट में क्या होना है। संविधान बनाते समय, वे कितने विद्वान लोग होंगे, जिन्होंने दुनिया के संविधान का अध्ययन किया, लेकिन अपने विजन से संविधान को बनाया। आज भी भारत का संविधान दुनिया के कई बड़े देशों के संविधानों से सर्वश्रेष्ठ ही है, मार्गदर्शक भी है और उस पर हमारा सारा सिस्टम जितना भी है, हम संविधान से चलते हैं। यह एक विशेषता रही है। संविधान में संशोधन हुए हैं, आवश्यकता के अनुसार हुए हैं। संविधान सभा की डिबेट जब आप पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि हर संविधान पर कितनी डिबेट हुई, कितनी व्यापक चर्चा हुई, लेकिन सर्वसम्मति से संविधान बना। उस समय यह था कि परिस्थितियों के अनुसार यह फ्लेक्सिबल होगा, इसलिए सबसे ज्यादा संविधान के संशोधन हुए। हम डेमोक्रैटिक सिस्टम को लगातार मेंटेन कर पाए हैं और सहज रूप से सत्ता का स्थांतरण होता रहा है। इतने बड़े देश के अंदर लोगों को लगता था कि कैसे भारत सर्वाइव कर पाएगा। उस समय 1947 की आजादी के बाद विश्व के देशों के कमेंट्स जब आप देखेंगे, तब अधिकतम देशों का मानना था कि जो संविधान बना है, जिस तरीके की चुनाव पद्धतियां अपनाई हैं, संभव नहीं कि भारत लंबे समय तक चल पाएगा। हमने साबित किया, हमने चर्चा, डिबेट, संवाद से देश में परिवर्तन किया, कानून बनाये। कानूनों पर व्यापक चर्चा और संवाद हुए। कानूनों के अंदर जब-जब भी आवश्यक हुए, परिवर्तन किए।

हमने कानूनों के अंदर जब आवश्यक हुआ, परिवर्तन किए। हमने कानूनों को रिपील भी किया, नए कानून बनाए, पुराने प्रचलित कानूनों को आज की आवश्यकता के अनुसार बदला। इन सारी डेमोक्रेसी की चीजों को समझना, अध्ययन करना है। जब आप कभी कहीं जाएंगे तो चर्चा में रहेंगे कि भारत डेमोक्रेटिक क्यों है? डेमोक्रेसी हमारी विचारधारा में है, हमारी धारणा में है। आप इतिहास पढ़ें कि भारत शुरू से गांव से लेकर डेमोक्रसी का सिस्टम है। गांव में पंचायत होती थी, पांच लोग बैठते थे, पंच होते थे, निर्णय करते थे, कोर्ट नहीं था, थाना नहीं था। यह हमारी विचारधारा में रही है, हमारी कार्य प्रणाली में रही है, यह अपने आप बिल्ट होता है, वैसे भी लोकतंत्र हमारे दैनिक जीवन के अंदर है।

जब कभी घर में विवाद होता है तो हम पांच लोग बैठकर चर्चा करते हैं, जो फैसला होता है उसका सम्मान होता है। हमें डेमोक्रेसी को समझना है। डेमोक्रेसी में चर्चा संवाद, डिबेट से परिवर्तन हुआ। 75 वर्षों के बाद भारत वैश्विक मंच पर आज नेतृत्व कर रहा है। दुनिया में जितनी बड़ी पॉलिसियां हैं, नीतियां हैं, उसे बनाने का काम भारत कर रहा है। हमने कई ऐसे परिवर्तन किए और दुनिया उसे मानने लगी है। वैश्विक मंच पर बहुत कठिन होता है, सब देशों की अपनी स्वायत्तता होती है, भौगोलिक स्थितियां होती हैं, संस्कृति होती है, विचारधारा होती है। इसके बाद भी आप देखेंगे कि भारत वैश्विक मंच पर आज मजबूत हुआ है। इकोनामिक पॉलिसी के अंदर, टेक्नोलॉजी के अंदर, सोशल पॉलिसियों के अंदर, एजुकेशन सिस्टम में बहुत बड़ी जनसंख्या अनपढ़ थी और आज नौजवानों की बौद्धिक

क्षमता दुनिया में दिख रही है, हर कहीं डॉक्टर, इंजीनियर भारत के हैं। जापान जैसे देश में जाएंगे तो आईटी में भारत के नौजवान नेतृत्व कर रहे हैं।

हम मानव संसाधनों को सर्वश्रेष्ठ करने की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं। आने वाले समय में भारत के प्रधानमंत्री जी का विज़न है कि हम किस तरीके से मानव संसाधनों को श्रेष्ठ बनाएं ताकि देश में उसका कंट्रीब्यूशन हो, इंटरनेशनल स्तर पर भी कंट्रीब्यूशन हो। वर्तमान और आने वाले विश्व की चुनौतियों के समाधान में इतनी बड़ी आबादी आर्थिक रूप से स्ट्रांग हो रही है। हम पहले इतने स्ट्रांग नहीं थे, फिर भी हमने उन पॉलिसियों को अपनाया, उन नीतियों को अपनाया। टेक्नोलॉजी की बात करें, ग्रीन एनर्जी की बात करें या सोलर एनर्जी की बात करें, दुनिया के अंदर भारत नेतृत्व कर रहा है।

क्लाइमेट चेंज का विषय बहुत लंबा है। आप किसी भी देश में जाएंगे तो वे क्लाइमेट चेंज की चर्चा करेंगे। इसकी चिंता बहुत पहले विकसित देशों ने की थी, लेकिन उन चिंताओं का एग्जीक्यूशन नहीं हो पाया था। भारत ने इतनी बड़ी आबादी होने के बाद, आर्थिक, भौगोलिक स्थिति के बाद इसे अपनाया और मेजर रूप से परिवर्तन किया। विश्व के अंदर दो-तीन विषय हमेशा भारत के प्रति आकर्षित करने वाले लगेंगे, उसमें पर्यावरण भी एक बड़ा विषय है। जब हम कहीं जाते हैं तो यह चर्चा का विषय बनता है। डेवलप्ड कंट्रीज़ क्लाइमेट चेंज की चर्चा नहीं करती क्योंकि एग्रीमेंट और कमिटमेंट को पूरा नहीं किया, लेकिन भारत जैसा देश क्लाइमेट चेंज की चर्चा करता है।

तीन-चार विषय आपके जीवन में रहें कि हम एक डेमोक्रेटिक देश हैं। आपको ऐसे देश भी मिलेंगे जहां डेमोक्रेसी नहीं है, लेकिन उन्होंने डेमोक्रेसी का एक चेहरा बना रखा है। दुनिया में यह साबित हुआ है कि डेमोक्रेसी शासन चलाने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है। इस संबंध में दुनिया के देशों के बीच दोहरे मत नहीं हैं। उसमें भारत की डेमोक्रेसी सबसे मजबूत है। आप लोकतंत्र के इस मंदिर में आए हैं, तो आपको अध्ययन, अध्यापन और प्रशिक्षण का पर्याप्त अवसर मिलेगा। आप ठीक से इंटरनैशनल स्तर पर अपने विषयों को रख सकेंगे। जिन विषयों में भारत ने नए परिवर्तन किए हैं, उनको आप देखेंगे। आज दुनिया के अंदर आर्थिक डेस्टिनेशन का बड़ा केंद्र बन रहा है। दुनिया के देश अनुकूलता, मैन पावर या बाजार आदि दृष्टि से देखते हैं, तो उनको भारत नजर आता है। इसमें भी भारत ने काफी सार्थक कदम बढ़ाए हैं। अन्य देशों में भी जी-20 सम्मेलन हुए हैं, लेकिन किस तरह से भारत ने जी-20 के तहत अधिकतम राज्यों और अधिकतम सेक्टरों को कवर किया, ताकि डिबेट और डिस्कशन से जो निर्णय निकले, वह वैश्विक मंचों पर समान रूप से लागू हों, ताकि वैश्विक रूप में परिवर्तन हो। हमने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का नारा दिया है, यानी हमने विश्व को एक परिवार माना है। आप देखेंगे कि कोई देश इस तरह का नारा नहीं दे सकता, जो कि वन अर्थ, वन फैमिली और वन फ्यूचर है। किसी भी देश का चिंतन ऐसा नहीं हो सकता। केवल भारत नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को लेकर हम साथ चलेंगे और एक सहयोगी के रूप में चलेंगे, तो ही परिवर्तन होगा। यही हमारी संस्कृति है और इसकी बड़ी पहचान दुनिया में बनती जा रही है। भारत का जो विजन है, वह दुनिया को साथ लेकर चलना है। अन्य कई सेक्टर्स जैसे डिफेंस, हेल्थ सेक्टर आदि भी हैं। हेल्थ सेक्टर में आप देखेंगे कि दुनिया में सबसे सस्ती और अच्छी क्वालिटी की दवाएं भारत की हैं। अनेक देशों में भारत की दवाएं जाती हैं। अफ्रीकन देशों में

भारत की दवाएं जाती हैं। आप टूरिज्म को देखें, तो मेडिकल टूरिज्म में विकसित देशों के लोग भी इलाज कराने भारत आते हैं। सस्ता और बेहतर इलाज भारत में मिलता है।

मैं जितने भी देशों में गया, तो विभिन्न देशों के लोगों ने भारत की अलग-अलग चीजों को लेकर आकर्षण देखा। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि यदि आप प्रभावी विदेश सेवा के अधिकारी होंगे, तो वैश्विक मंच पर प्रभावी तरीके से अपनी बात रख सकेंगे। जो वैश्विक स्तर पर अपनी बात को प्रभावी तरीके से रखता है, उसके देश के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता है। हम धरातल की बात रख रहे हैं, इसलिए आज भारत की वैश्विक स्तर पर अलग पहचान बनी है और शक्ति बढ़ी है। हम कह सकते हैं कि वैश्विक स्तर पर नेतृत्व करने की क्षमता भारत में है। हमारी नीतियों, पॉलिटिकल लीडरशिप के कारण, हमारे नौजवानों के कारण, हमारी आध्यात्मिक संस्कृति आदि के कारण आज भारत नेतृत्व कर रहा है। मुझे आशा है कि आने वाले समय में दुनिया की आकांक्षाओं को पूरा करने का काम भारत करे, इस दुनिया के लोगों की अपेक्षाएं भारत से हों और भारत में सबकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को पूरा करने की शक्ति हो, यह हमारा मूल मंत्र होना चाहिए। यही हम सब देखना चाहते हैं। आप सब यहां आए, उसके लिए आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई।